श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

गुरु जन्मोत्सव – २१-०४-२०२६

श्री गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द प्रयोग

"स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्दजी साधना प्रयोग" को सम्पन्न कर हम सभी सन्यासी शिष्यों ने इस पूर्णता को प्राप्ती की विशेष रूप से स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी के लिए ही यह प्रयोग विधि बनाई गई थी, जो प्रयोग विधि महा तेजस्वी योगीराज महारूपा जी से प्राप्त हुई थी, और जिसके माध्यम से साधनाओं में सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त करने में हम लोगों ने सफलता पाई है।

साधक या साधिकायें स्नान आदि से निवृत्त होकर पीले या सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर बैठें। सामने गुरु का चित्र लगाकर पंचोपचार पूजन करें और गुरु मंत्र का जप करें। इस साधना को गुरुवार के दिन प्रारंभ करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानन्द मंत्रस्य भगवान श्री महारूपा ऋषि गायत्री छन्द निखिलेश्वरानन्द योगीश्वर्यै, क्लीं बीजम्, श्रीं शक्ति ऐं कीलकं, प्रणवो ॐ व्यापक मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्री महारूपा ऋषये नमः - शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः - मुखे। निखिलेश्वरानन्द ऋषिभ्यो नमः हृदि। श्रीं शक्तये नमः- नाभौ। क्लीं बीजाय नमः - गुह्ये। ऐं - कीलकाय नमः - पादयोः। ॐ व्यापकाय नमः - सर्वांगे। मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगाय नमः - पुष्पांजली।

षडंग न्यास	कर-न्यास	अंग न्यास
ॐ ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्राणात्मन	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
"निं"	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्व सिद्धि प्रदाय	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
निखिलेश्वरानन्दाय	कनिष्ठाकाभ्यां वौषट्	नेत्र त्रयाय वौषट्
नमः	कर-तल-कर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद मानस पूजन करें

मंत्र: ॥ ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राणात्मन "निं" सर्व सिद्धि प्रदाय निखिलेश्वरानन्दाय नमः॥ (सवा लाख मंत्र जप से सिद्धि)

सवा लाख मंत्र जप की यह साधना ३, ५, ९, ११, १६, २१ या ४१ दिनों में पूर्ण की जा सकती है।

प्रतिदिन नीचे दिए गए निखिलेश्वरानन्द स्तवन का पाठ करना चाहिए , अथवा सोमवार और गुरुवार को तो निश्चय ही इसका पाठ कर बाद में ही अन्न जल ग्रहण करना चाहिए।

निखिलेश्वरानंद स्तुति

ॐ नमस्ते सते सर्व लोकाश्रयाय, नमस्ते चिते विश्व-रुपात्मकाय।
नमोऽद्वैत तत्त्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ॥

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्- कारणं विश्व-रूपम्।
त्वमेकं जगत् कर्तृ - पातृ- प्रहतृ , त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तुः त्वमेकं, परेषां परं रक्षकं रक्षकाणाम् ॥

परेशं प्रभो! सर्व-रुपाविनाशिन्, अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्त्व जगद्- भासकाधीश पायादपायात् ॥

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥

नमस्ते-नमस्ते विभो! विश्वमूर्ते! नमस्ते-नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते-नमस्ते तपो योगगम्यः नमस्ते-नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्यः ॥

तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामः तदेकं जगत्-साक्षि-रूपं नमानः ।
तदेकं निधानं निरालम्बरूपं भवाम्बोधि पोतं शरण्यं व्रजामः ॥

यं ब्रह्मा वरूणेन्द्ररुद्र-मारुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः साङ्गपदक्रमोर्पानिषदैः गायन्ति यं सामगाः ॥

ध्यानावस्थिताद्-गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

जय गुरु देव

देह सूक्ष्म प्रयोग

उपरोक्त स्तवन पाठ के बाद निम्न प्रकार से देह सूक्ष्म प्रयोग करें।

साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का शिष्य अपने देह की रक्षा करता हुआ, अपने स्थूल देह को सूक्ष्म देह में परिवर्तित कर समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करने की सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए परम पूज्य गुरुदेव को और उनकी समस्त शक्तियों उनके समस्त ज्ञान, और उनकी समस्त सिद्धियों के साथ मैं उन्हें अपने शरीर में समाहित करता हूँ।

गुरुदेव शिर: पातु हृदयं निखिलेश्वर:।

कंठं पातु महायोगी वदनं सर्व-दृग्-विभु:।

करो मे पातु पूर्णात्मा पादो रक्षतु स्वामिन:।

सर्वांगं सर्वदा पातु परब्रह्म सनातनम्।

य: पठेद् गुरु कवचं ऋषि-न्यास पुर: सरम्।

स ब्रह्म ज्ञानमासाद्य साक्षात् ब्रह्म मयो भवेत्।

भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि।

कण्ठे दक्षिणे बाहौ सर्व सिद्धिश्वरो भवेत्॥

इत्येतत् परम: गुरु कवचं य: प्रकाशितम्।

दद्यात् प्रियाय शिष्याय-भक्ताय प्रिय धीमते।

इस प्रकार साधक इस स्तोत्र कवच का पाठ कर दोनों हाथ जोड़ कर गुरुदेव के चित्र या उनकी पादुका के सामने भक्तिभाव के साथ प्रणाम करे -

करुणामय ! दीनेश ! तवाहं शरणं गतः ।

त्वत्-पदाभ्योरुहच्छायां देहि भूर्ध्नि यशोधन ॥

इस प्रकार साधना और प्रयोग सम्पन्न करने के बाद जब गुरु प्रसन्न होते हैं, तो उनके चित्र से या उसकी पादुका से (यदि ये साक्षात उपस्थित हो तो उनके मुंह से) शब्द उच्चरित होते हैं -

उत्तिष्ठ वत्स । मुक्तोऽसि ब्रह्म-ज्ञान-परो भव ।

जितेन्द्रिय: सत्य-वादी बलारोग्यं सदास्तु ते ॥

यदि पूज्य गुरुदेव सशरीर सामने उपस्थित न हों तो साधक ऐसा अनुभव करे, कि पूज्य गुरुदेव उसे ऐसा ही आशीर्वाद दे रहे हैं।

अर्थात् हे पुत्र, हे शिष्य, हे आत्मीय, उठो, तुम मुक्त हो, मेरे शिष्य रहते हुए ब्रह्म ज्ञान का अध्ययन करो, तुम इन्द्रियों पर अपने विकारों और बुद्धि पर नियंत्रण करते हुए सत्यवादी बने रहो, और चुनौतियों का दृढता के साथ सामना करो। बल और आरोग्य हमेशा तुम्हारे साथ रहे और तुम पूर्णता प्राप्त करो।

इसके बाद साधक खड़े हो कर पूर्ण भक्ति भाव से गुरुदेव की आरती सम्पन्न करे और गुरुदेव को समर्पित किया हुआ प्रसाद स्वयं तथा अपने परिवार को दे, तथा गुरुदेव का आज्ञाकारी हो कर देवता के समान भूमण्डल पर विचरण करता हुआ, उनके आदर्शों का पालन करे।

****